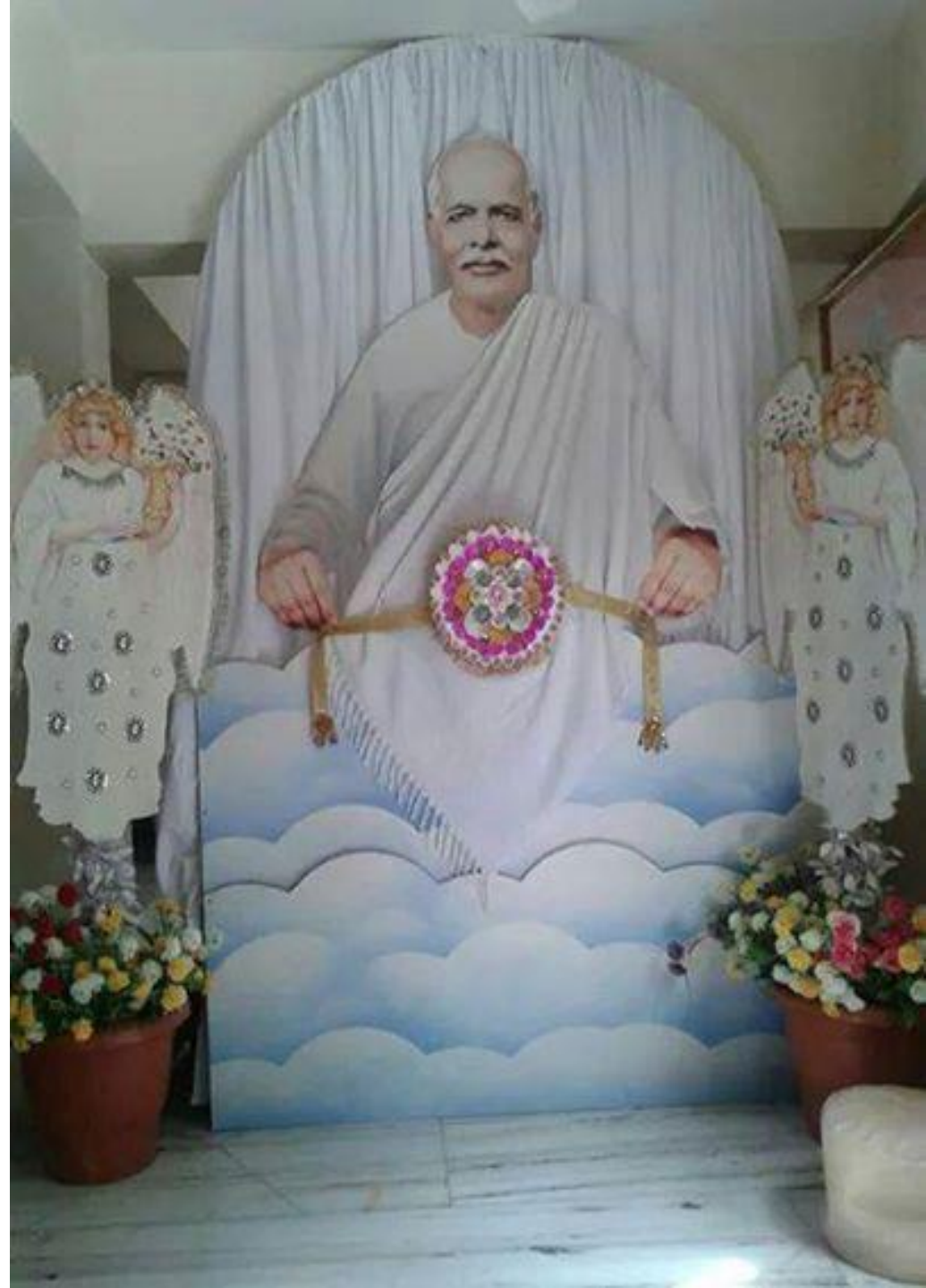
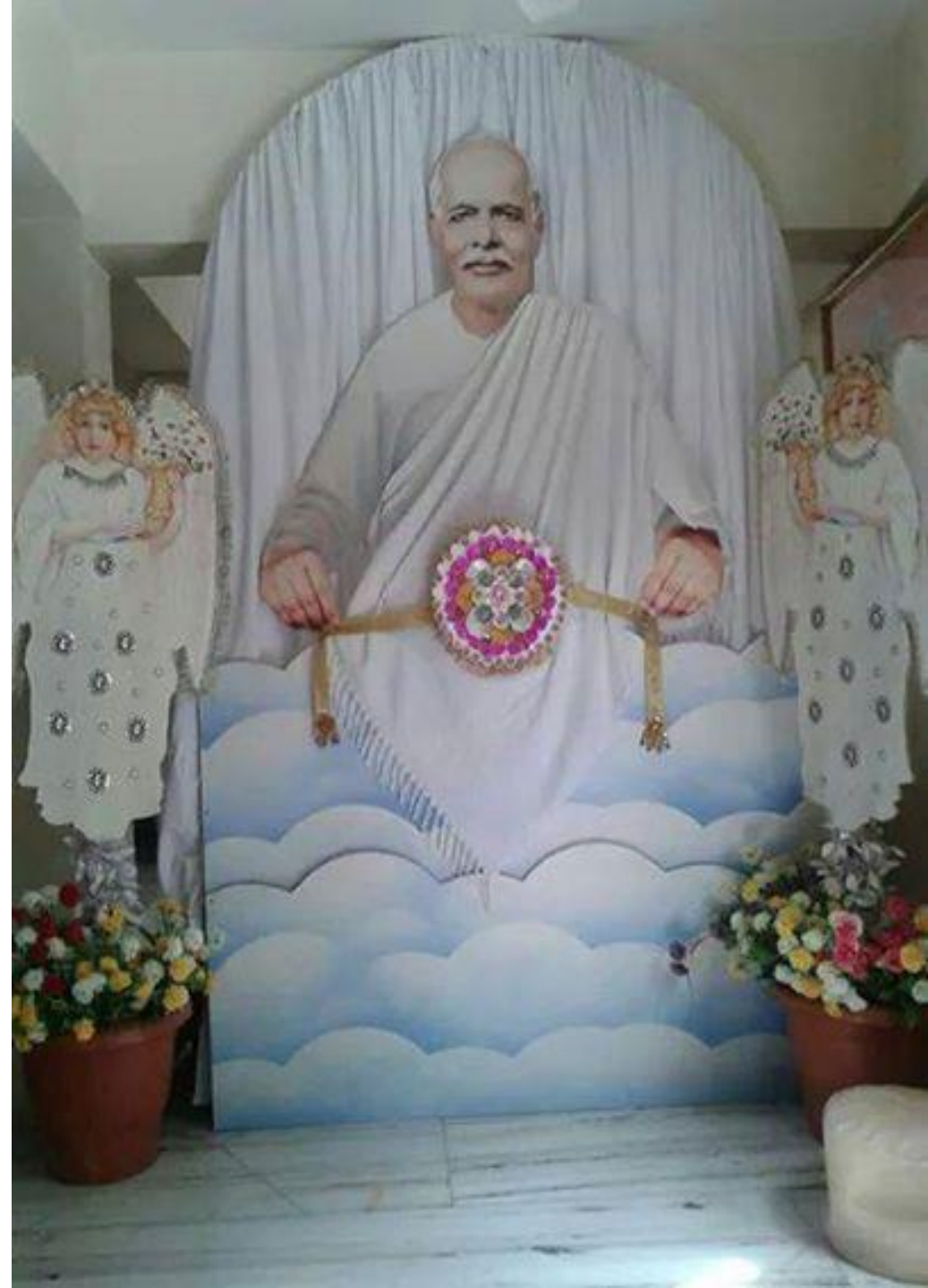


Rakhi

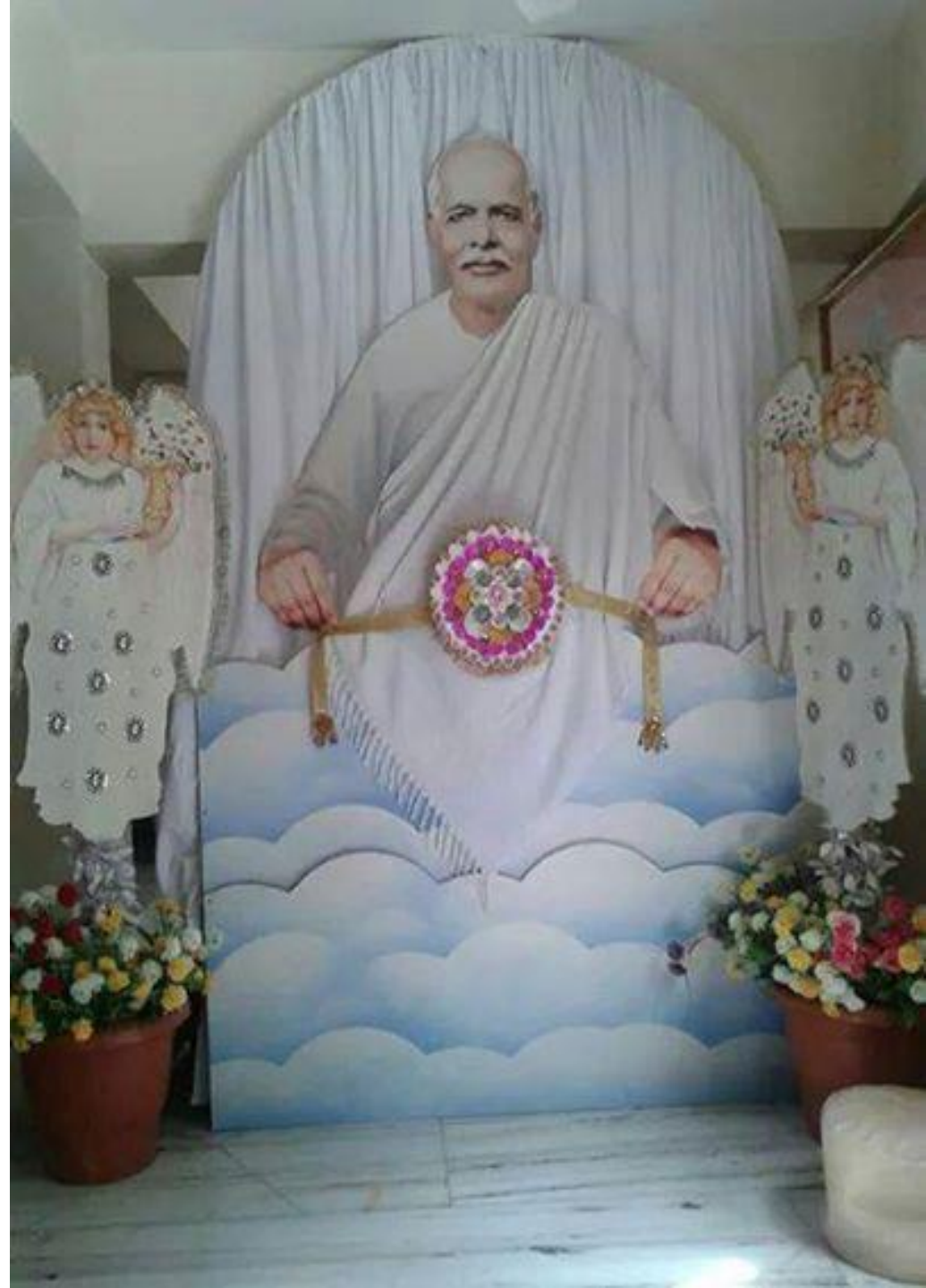
By Bapdada



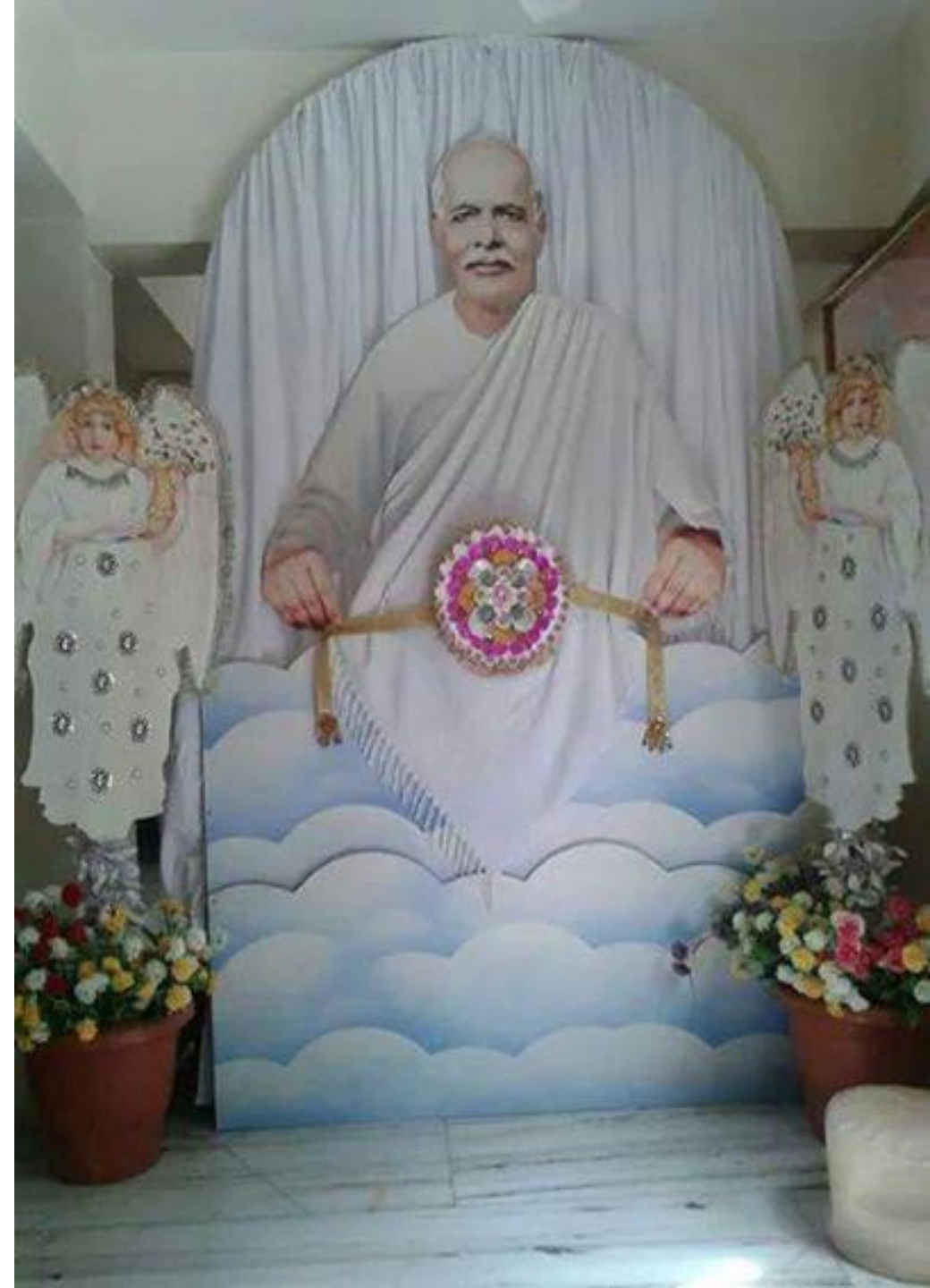
राखी पर यह प्रतिज्ञा करावेंगे ना कि पवित्र बनो? तो पहले स्वयं को कंगन बांधना पड़े तब दूसरों को भी इस कंगन में बांध सकेंगे। जिनको राखी बांधते हो वह पवित्र बनते हैं वा व्रत लेते हैं? इतनी हिम्मत भी नहीं रखते। कारण? पहले बांधने वाले स्वयं व्रत में रहते हैं? मंसा में कोई भी अपवित्रता अगर आ जाती है तो पूरा व्रत कहेंगे? इस कारण जितनी बांधने वाले में कमी है, तो जिसको बांधते हो उन्हों के ऊपर भी इतना आपकी पवित्रता के आकर्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है। एक रीति रस्म के माफिक सिर्फ संदेश लेते हैं कि इन्हों का यह रहस्य है। व्रत नहीं लेते, क्यों? अपना ही कारण कहेंगे ना वा कहेंगे कि भाग्य में नहीं है? भाग्य बनाने वाले तो आप हो ना। भाग्य बनाकर ही आओ वा भाग्य बनाने की इतनी तीव्र प्रेरणा देकर आओ जो आपके पीछे-पीछे आकर्षित हो भाग्य बनाने बिना रह न सकें। इतनी आकर्षण वाली है ना।



यहाँ भारत में तो अनेक कहानियां बना दी हैं क्योंकि कहानियाँ सुनने की रुची रखते हैं। तो हर उत्सव की कहानियाँ बना दी हैं। आपकी जीवन कहानी से भिन्न-भिन्न छोटी-छोटी कहानियाँ बना दी हैं। कोई राखी की कहानी बना दी कोई होली की कहानी, कोई जन्म की कहानी बना दी। कोई राज्य दिवस की बना दी। लेकिन यह हैं सब आपके जीवन कहानियों की कहानियाँ।



एक बार जो राखी बांधता है वह बदल नहीं सकता। अगर कोई बदल जाए तो बापदादा उसको क्या कहेंगे? उसको कहते हैं कायर, कमजोर। तो आप सब ऐसे तो नहीं हो ना! बापदादा का बच्चों में पूरा निश्चय है। सच्ची फ्रेंड हो ना! बाप ऐसा फ्रेंड मिला है



जिन्हों को नालेज नहीं, शक्ति नहीं उन्हों को भी राखी बांध-बांध करके प्रतिज्ञा कराते हो और जो बहुत काल से नालेज, सम्बन्ध और शक्ति को प्राप्त करने वाले हों वह श्रेष्ठ आत्मार्यें, महावीर आत्मार्ये, शक्तिस्वरूप आत्मार्यें, पाण्डव सेना क्या यह प्रतिज्ञा की राखी नहीं बांध सकते हो? क्या अन्त तक कमजोरी और कमी को अपना साथी बनाने चाहते हो? आजकल साइन्स द्वारा भी एक सेकेण्ड में कोई भी वस्तु को भस्म कर लेते हैं, तो नालेजफुल मास्टर सर्वशक्तित्वान एक सेकेण्ड के दृढ़ संकल्प से वा प्रतिज्ञा से अपनी कमजोरियों को भस्म नहीं कर सकते हो? वह भी सिर्फ 4 वर्ष के लिए कह रहे हैं। 4 वर्ष की प्रतिज्ञा सहज है वा मुश्किल है? औरों को तो बड़े फोर्स, फलक से यह प्वाइन्ट देते हो। तो जैसे औरों को फलक और फखुर से कहते हो वैसे अपने आप में भी विजयी बनने की फलक और फखुर नहीं रख सकते हो?

